देशRangila

॥ लिङ्गाष्टकम्॥

www.DeshRangila.com

॥ लिङ्गाष्टकम्॥

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम् ।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥१॥

अर्थ: जिसके दर्शन मात्र से पाप नष्ट हो जाते हैं, ऐसे शिवलिंग को मैं नमन करता हूँ।

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम् ।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥२॥

अर्थ: जिस शिवलिंग का पूजन ब्रह्मा, विष्णु और देवगण भी करते हैं, उस शिवलिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम् ।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥३॥

अर्थ: जो समस्त जीवों के कल्याण के लिए प्रतिष्ठित है, उस शिवलिंग को मैं वंदन करता हूँ।

कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम् ।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥४॥

अर्थ: जिसके ध्यान से जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्ति मिलती है, उस शिवलिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।

कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम् ।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥५॥

अर्थ: जो त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के भी स्वामी हैं, उस शिवलिंग को मैं नमन करता हूँ।

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥६॥

अर्थ: जिसकी पूजा से सभी संकट और दुख समाप्त हो जाते हैं, उस शिवलिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् ।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥७॥

अर्थ: जो जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त कराता है, उस शिवलिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम् ।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥८॥

अर्थ: जिसकी आराधना से जीव समस्त भौतिक इच्छाओं से मुक्त हो जाता है, उस शिवलिंग को मैं नमन करता हूँ।

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

अंत में, यह स्तोत्र कहता है कि जो भी श्रद्धालु इस लिङ्गाष्टकम् का पाठ करता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर शिवलोक में स्थान प्राप्त करता है।

॥ जय भोलेनाथ ॥

देशRangila

www.DeshRangila.com